एक ओर सामाजिक व्यवस्थाओं ने स्त्री को अधिकार देने में पुरुष की सुविधा का विशेष ध्यान रखा है, दूसरी ओर उसकी आर्थिक स्थिति भी परावलंबन से रहित नहीं रही। भारतीय स्त्री के संबंध में पुरुष का भर्ता नाम जितना यथार्थ है उतना संभवतः और कोई नाम नहीं। स्त्री, पुत्री पत्नी, माता आदि सभी रूपों में आर्थिक दृष्टि से कितनी परमुखापेक्षणी रहती है, यह कौन नहीं जानता। इस आर्थिक विषमता के पक्ष और विपक्ष दोनों ही में बहुत-कुछ कहा जा सकता है और कहा जाता रहा है। आर्थिक दृष्टि से स्त्री की जो स्थिति प्राचीन समाज में थी उसमें अब तक परिवर्तन नहीं हो सका, यह विचित्र सत्य है।

3. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (10×3=30)

(क) मदारी पासी की क्रांतिकारिता

(ख) 'मुर्दहिया' में व्यक्त ग्रामीण संस्कृति

(ग) दलित स्त्रीवाद पर आक्षेप

(घ) गोविंद गुरु का व्यक्तित्व

(ङ) 'मैं किसकी औरत हूँ' की मूल संवेदना

(च) आदिवासी पहचान का सवाल और साहित्य में उसकी अभिव्यक्ति

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 5365 **G**

Unique Paper Code : 12057503

Name of the Paper : अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi, DSE**

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

Ramanujan College Library Kalkaji, New Delhi-110019

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. दलित विमर्श के संदर्भ में डॉ. भीमराव अंबेडकर के योगदान को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

स्त्रीवाद की विकास-यात्रा का निरूपण करते हुए उसके प्रमुख सरोकारों का उल्लेख कीजिए। (15)

2. किन्हीं **तीन** अंशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) बारात ठहराने के लिए स्कूल का बरामदा ही मिल पाया था। प्रधान जी ने स्कूल खोल देने की हामी तो भर दी थीद्य लेकिन ऐन वक्त पर हेडमास्टर कहीं रिश्तेदारी में चले गए थे। काफी भाग-दौड़ के बाद भी चाबी नहीं मिली थी। आखिर हारकर बारात को बरामदे में ही ठहराना पड़ा था। स्कूल में जो हैंडपंप था, एक रात पहले किसी ने उसका हत्था और वाल्व भी खोल लिए थेद्य पीने के पानी का और कोई इंतजाम वहाँ नहीं थाद्य बड़ी मुश्किल से दो मिट्टी के घड़े ही मिल पाए थे।

अथवा

'कहाँ है मेरा सूरज, कहाँ है मेरा शीतल पवन, कहाँ गई इंद्रधनुषी छटा, कहाँ गई बरसाती फुहारें, कहाँ है मेरी प्यारी समतल भूरी धरती और कहाँ है उस धरती पर खिल रहे रंग-बिरंगे नाना प्रजातियों के मेरे फूल?' गोविंद गुरु अर्धनिद्रावस्था में बहके।

(ख) रहड़ के जगह नाहीं, जोतइ के जमीन कहाँ
कहैं देबे गाँव से निसार।
घरवा के नमवाँ पे एकही मड़ैया में,
ससुई पतोहू परिवार।।

मेघा और मगर गोह, साँप मूस खाई हम,
करी गिलहरिया शिकार।
कुकुरा के साथ धाई जुठली पतरिया पै
पेटवा है पपिया भंडार।।

अथवा

मुरझाने पर मसलकर फेंक दी गई,
जलाई गई।
उसकी राख बिखेर दी गई
पूरे गाँव में।

रात को बारिश हुई झमड़कर।
अगले ही दिन
हर दरवाजे के बाहर
नागफनी के बीहड़ घेरों के बीच
निर्भय-निस्संग चम्पा
मुस्कुराती पाई गई

(ग) एक छोटी लड़की शाम से जंगले पर चुपचाप बैठी हुई है। आज वह खेलने भी नीचे नहीं उतरी। सहेलियाँ आई, उसने झिड़क दिया। खामोश निगाहें दीवार पर बड़ी होती छायाओं को चुपचाप देख रही है। सूरज डूब गया। वह वहीं बैठी हुई है। हवा में ठंडक बढ़ गई है दाई माँ स्वेटर पहना गईं। उसने पहन लिया। खाने के लिए पूछा तो फिर मना कर दिया। सामने वाले मकान में अपनी दोस्त चित्रा के घर भी खेलने नहीं गई।

अथवा